

अंगूठे चूमने का मसला

हजरत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सुन्नत

हजरत मौलाना मुहम्मद रफीअ ओकाइवी (खतीबे पाकिस्तान)

www.jannatikaun.com

अंगूठे चुमने का मसअला

(सुन्नते सिद्दीकी)

मुरत्तिबा

खतीबे पाकिस्तान हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब ओकाड़वी

JANNATI KAUN?

पेशे लफ़्ज़

खुश अक़ीदा मुसलमानों की बड़ी तादाद अपने प्यारे रसूले रहमत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मुक़द्दस नामे पाक अज़ान में सुनकर अंगूठे या अंगुशते शहादत को चूमकर आँखों से लगाती है। मुसलमानों का यह अमल बिला शुबहा जाइज़ और बाइसे ख़ैरो-बरकत है जिस पर सहाब-ए-किराम, ताबईने उज़्ज़ाम फ़ुक़हा-ए-किराम और हमारे सल्फ़ सालेहीन का अमल रहा है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नामे पाक पर अंगूठे चूमना जिस तरह फ़र्ज़ या वाजिब नहीं उसी तरह वह हराम व नाजाइज़ भी नहीं है इस मुबारक फ़ैअल को नाजाइज़ कहना महज़ जिहालत या फिर ग़लत-फ़हमी है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नामे अक़्दस सुनकर अंगुशते शहादत आँखों से लगाना, हुज़ूर के नामे अक़्दस को ताज़ीम है और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीमों तौकीर को क़ुरआन पाक में जा-बजा ताकीदे आई है। हज़रत इब्नुलहाम रहमतुल्लाहु तआला अलैहि फ़रमाते हैं "हर वह फ़ैअल जिससे ताज़ीम मक़सूद हो बिलाशुबहा मुस्तहब है।"

पेशे नज़र मक़ाले में बर्रे सगीर हिन्द व पाक के मुमताज़ आलिमे दोन हज़रत अल्लामा मुहम्मद शफ़ीअ साहिब ओकाड़वी रहमतुल्लाह अलैहि ने सरकार के नामे पाक पर "अंगूठे चूमने का मसअला" के मौजूअ पर अहादीसे मुयारिका व अक़्बाले फ़ुक़हा की रौशनी में खुल कर ख़ामा फ़रसाई फ़रमाई है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि इस किताब के ज़रीए मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाइदा पहुंचे। (आमीन बजाह सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

सय्यद आरिफ़ अली रज़वी सदर रज़ा लाईब्रेरी कल्यान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ ط

हुजुरे पुरनूर शफीअे यौमुन-नुशूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे पाक अज़ान में सुनने के वक़्त अंगूठे या अंगुशताने शहादत चूमकर आँखों से लगाना क़तअन जाइज़ व मुस्तहब और बहुत ही बाइसे रहमत व बरक़त है। इसके जवाज़ पर दलाइले कसीरह मौजूद हैं और मुमानिअत पर कोई दलील मौजूद नहीं। चन्द दलाइल हदिये नाज़रीन हैं।¹

(1) अल्लामा फ़ाज़िल-कामिल शैख़ इस्माईल हकी रहमतुल्लाह अलैहि अपनी शुहरा-ए-आफ़ाक़ तफ़सीर रूहुल बयान में फ़रमाते हैं-

किससुल अम्बिया वगैरह

وَفِي قِصَصِ الْأَنْبِيَاءِ وَغَيْرِهَا أَنَّ

أَدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اشْتَقَّ إِلَى لِقَاءِ

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ

كَانَ فِي الْجَنَّةِ فَأَوْحَى اللَّهُ تَعَالَى

إِلَيْهِ هُوَ مِنْ صُلْبِكَ وَيَظْهَرُ فِي

آخِرِ الزَّمَانِ فَسَأَلَ لِقَاءَ مُحَمَّدٍ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ كَانَ

فِي الْجَنَّةِ

कुतुब में है कि जब हज़रत आदम

अलैहिस्सलाम को जन्नत में हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की मुलाक़ात का इशतयाक़ हुआ

तो अल्लाह तआला ने उनके तरफ़

वही भेजी कि वह तुम्हारे सल्ब से

आखिर ज़माने में ज़हूर फ़रमायेंगे

तो हज़रत आदम ने आपकी

मुलाक़ात का सवाल किया तो

अल्लाह तआला ने आदम

अलैहिस्सलाम के दाये हाथ के

कलमे की उंगुली में नूरे मुहम्मदी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

चमकाया तो उस नूर ने अल्लाह

1. मसअल-ए-हाज़ा के मुतअल्लिक् मुफ़स्सल बहस देखनी हों तो "मुनूरुलऐन फ़ी हुक़मे तक़वीलिल अब्हामीन" मुसन्निफ़हे आला हज़रत फ़ाज़िल वरैलवी रहमतुल्लाह अलैहि "जाअलहक्को व ज़हकल-बातिल" मुसन्निफ़ह हज़रत मौलाना मफ़्ती अहमद दार खां नईमी का मुताला करें।

فَأَوْحَى اللَّهُ تَعَالَى إِلَيْهِ فَبَجَلَ اللَّهُ
النُّورَ الْمُحَمَّدِيَّ فِي إصْبَعِهِ
الْمُسَبَّحَةِ مِنْ يَدِهِ الْيُمْنَى فَسَبَّحَ ذَا
لِكَ النُّورُ فَلِذَاكَ سُمِّيَتْ تِلْكَ
الْإِصْبَعُ مُسَبَّحَةً كَمَا فِي الرَّوضِ
الْفَاتِقِ أَوْ أَظْهَرَ اللَّهُ تَعَالَى جَمَالَ
حَبِيبِهِ فِي صِقَاءِ ظَفَرِي إِبْهَامِيهِ
مِثْلُ الْمِرْآةِ فَقَبَّلَ آدَمُ ظَفَرِي
إِبْهَامِيهِ وَمَسَحَ عَلَى عَيْنَيْهِ فَصَارَ
أَصْلًا لِذُرِّيَّتِهِ فَلَمَّا أَخْبَرَ جِبْرِيلُ
النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذِهِ
الْقِصَّةِ قَالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مَنْ
سَمِعَ اسْمِي فِي الْأَذَانِ فَقَبَّلَ
ظَفَرِي إِبْهَامِيهِ وَمَسَحَ عَلَى عَيْنَيْهِ
لَمْ يَرْمُدْ أَبَدًا۔ روح البیان صفحہ ۴/۳۹۹

(2) इसी तफ़्सीर रूहुलबयान

در محبت آورده کہ پیغمبر صلی اللہ
علیہ وسلم بمسجد در آمد و نزدیک
ستون نبشت و صدیق رضی اللہ عنہ
در برابر آنحضرت نشسته بود بلال
رضی اللہ عنہ برخاست و با اذان

की तस्बीह पढ़ी, इसी वास्ते इस
उंगली का नाम कलमे की
उंगली हुआ जैसा कि
रौजुल-फायक़ में है। और अल्लाह
तआला ने अपने हबीब के जमाले
मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम को हज़रत आदम के
दोनों अंगूठों के नाखुनों में मिस्ते
आईना जाहिर फ़रमाया तो
हज़रत आदम ने अपने अंगूठों के
नाखुनों को चूमकर आँखों पर
फेरा पस यह सुन्नत उनकी
औलाद में जारी हुई। फिर जब
जिबरील अमीन ने नबी करीम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को
इसकी ख़बर दी तो आपने
फ़रमाया जो शख्स अज़ान में
मेरा नाम सुने और अपने अंगूठों
के नाखुनों को चूमकर आँखों से
लगाए वह कभी अंधा न होगा।

मे है कि:-

मुहीत में लाया है कि
पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़
लाए और एक सुतून के करीब
बैठ गए। हज़रत अबू बकर
सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी
आपके बराबर बैठे थे। हज़रत

اشتغال فرمود چوں گفت اشهد ان
محمد رسول الله ابو بكر رضى الله هر دو
تاخن ايها من خود را بر هر دو چشم خود
نهاد ده گفت قُرْءَةً عَيْنِي يَا
رَسُولَ اللَّهِ چوں بلال رضى الله
عنه فارغ شد حضرت رسول الله
صلى الله عليه وسلم فرموده كه يا
ابا بكر هر كه بكند چنين كه تو كر دى
خداى بيا مژرو گناهان. جديد و قد يم

اور اگر محمد بوده باشد اگر بخطاء۔

و حضرت شيخ امام ابو طالب محمد بن على
المكى رفع الله درجته در قوت القوب
روایت کرده از ابن عيينه رحمة الله كه
حضرت پیغمبر عليه الصلوة والسلام بمسجد
در آمد و در دهم محرم و بعد از آنكه نماز جمعه
ادا فرموده بود نزدیک اسطوانه قرار
گرفت و ابو بكر رضى الله عنه بنظر ايها
من چشم خود را مسح كرد و گفت قرءة عيني

بيلال رضى الله عنه نه उठकर
अज्ञान देना शुरू की जब उन्होंने
कहा, हजरत अबू बकर सिद्दीक
रजियल्लाहु अन्हु ने अपने दोनों
अंगूठों के नाखुनों को अपनी दोनों
आँखों पर रखा और कहा कुरतु
अैनी बि-क या रसूलल्लाहा जब
हजरत बिलाल अज्ञान दे चुके,
हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
ने फरमाया ऐ अबू बकर जो शख्स
ऐसा करे जैसा कि तुमने किया है
खुदा तआला उसके तमाम गुनाहों
को बख्श देगा।

(3) और हजरत शैख़ इमाम

अबूतालिब मुहम्मद बिन अली
अलमक्की अल्लाह उनके दर्जात
बुलन्द करे अपनी किताब कुव्वतुल
कुलूब में इब्न ऐनैही से रिवायत
फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम नमाज़े जुमा अदा
करने के लिए मोहर्रम की दसवीं
तारीख़ को मस्जिद में तशरीफ़
लाए और एक सुतून के करीब बैठ
गए। हजरत अबू बकर रजियल्लाहु
अन्हु ने (अज्ञान में हुजूर का नाम
सुन कर) अपने दोनों अंगूठों के

بک یا رسول اللہ وچوں بلال رضی اللہ
عنه از اذان فراغت روئے نمود حضرت
رسول صلی اللہ علیہ وسلم فرمودہ کہ ای
ابا بکر ہر کہ بگوید آنچہ تو گفتی از روئے
شوق بقاء من و بکند آنچہ تو کردی
خدائے در گزارد گناہان ویرا آنچہ باشد
نو و کہنہ خطا و عمد و نہاں و آشکارا

ناखुनों को अपनी आँखों पर फेरा
और कहा कुरीति ऐनी बि-क या
रसूलल्लाह जब हजरत बिलाल
रजियल्लाहु अन्हु अज़ान से फ़ारिग
होगए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि
वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बकर
जो शख्स तुम्हारी तरह मेरा नाम
सुनकर अंगूठे आँखों पर फेरे और
जो तुमने कहा वह कहे खुदा
तबारक व तआला उसके तमाम
नये व पुराने ज़ाहिर व बातिन
गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएगा।

(4) अल्लामा इमाम शमसुद्दीन सखावी रहमतुल्लाह अलैहि वेलमी
के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं कि हजरत अबू बकर सिद्दीक़ रजियल्लाहु
अन्हु ने- **JANNATI KAUN?**

لَمَّا سَمِعَ قَوْلَ الْمُتَوَدِّعِ أَشْهَدُ أَنَّ
مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ قَالَ هَذَا وَقَبْلَ
بَاطِنِ الْأَمَلَيْنِ السَّبَابَتَيْنِ وَفَسَحَ
عَلَى عَيْنَيْهِ فَقَالَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ مَنْ فَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ خَلِيلِي
فَقَدْ حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي الْقَائِدِ الْحَسَنِ

जब मुअज़्ज़िन को
कहते सुना तो
यही कहा और अपनी अंगुशताने
शहादत के पोरे जानिबे ज़ेरी से
चूमकर आँखों से लगाए तो हुज़ूर
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने
फ़रमाया जो शख्स मेरे इस प्यारे
दोस्त की तरह करेगा मेरी शफ़ाअत
उसके लिए हलाल होगई।

الاحاديث الواردة على النبي

(5) यही इमाम सखावी हजरत अबू अब्बास अहमद बिन अबी
बकर रदादुल यमानी की किताब "मुजिबातुर्रहमा व अज़ाइमुल

मगफिरत" से नक़ल फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:-

مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْمُتَوَذِّنَ يَقُولُ

जो शख्स मुअज़्ज़िन से

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ مَرَّحَبًا
بِحَبِيبِي وَفَرَّةً عَيْنِي مُحَمَّدِ بْنِ

सुनकर कहे मरहबा बिहबीबी व
कुर-तु अनी मुहम्मद बिन

عَبْدِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَيُقْبَلُ إِبْهَامِيهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلَى

अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम फिर दोनों अंगूठे चूम कर
आँखों पर रखे उसकी आँखें

عَيْنِهِ لَمْ يَغْمِ وَلَمْ يَرْمُدْ-

कभी न दुखेगी।

(6) यही इमाम सखावी फ़कीह मुहम्मद बिन सईद खौलानी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत करते हैं कि सय्यदना हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:-

जो शख्स मुअज़्ज़िन से

مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْمُتَوَذِّنَ يَقُولُ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ مَرَّحَبًا
بِحَبِيبِي وَفَرَّةً عَيْنِي مُحَمَّدِ بْنِ

सुनकर कहे मरहबा बिहबीबी
कुर-तु अनी मुहम्मद बिन

عَبْدِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَيُقْبَلُ إِبْهَامِيهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلَى

अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम फिर दोनों अंगूठे चूम
कर आँखों पर रखे वह कभी

عَيْنِهِ لَمْ يَغْمِ وَلَمْ يَرْمُدْ-

अन्धा न होगा और न उसकी
आँखें कभी दुखेगी।

(المقاصد الحسنة)

(7) यही इमाम सखावी, शमसुद्दीन इमाम मुहम्मद बिन सालेह मदनी की तारीख़ से नक़ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने फ़रमाया मैंने हज़रत मजदे मिस्री को जो कामिलीने सालेहीन में से थे फ़रमाते सुना कि:-

مَنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَمِعَ ذِكْرَهُ فِي
الْأَذَانِ وَجَمَعَ إِصْبَعَيْهِ الْمُسَبَّحَةِ
وَالْإِبْهَامَ وَقَبَّلَهُمَا وَمَسَحَ بِهِمَا
عَلَى عَيْنَيْهِ لَمْ يَرْمُدْ أَبَدًا

जो शख्स नबी करीम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का
जिक्रे पाक अजान में सुन कर
दुरूद भेजे और कल्मा की
उंगलियां और अंगूठे मिला कर
उनको बोसा दे और आँखों पर
फेरे उसकी आँखें कभी न दुखेंगी।

(8) यही इमाम सखावी, इन ही इमाम मुहम्मद बिन सालेह की तारीख से नक़ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने फ़रमाया इराक़ के बहुत से मशाइख़ से मरवी हुआ है कि जब अंगूठे चूम कर आँखों पर फेरे तो यह दुरूद शरीफ़ पढ़े

JANNATI KAUN?

इन्शा अल्लाह कभी आँखें न दुखेंगी और यह मुजरब है। इसके बाद इमाम मज़कूर फ़रमाते हैं कि जबसे मैंने यह सुना है यह मुबारक अमल करता हूँ आज तक मेरी आँखें न दुखी है और न इन्शाअल्लाह दुखेंगी।
(मक़ासिदुल हसनह)

(9) यही इमाम सखावी इमाम ताउसी से नक़ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने शमसुद्दीन मुहम्मद बिन अबी नस्र बुख़ारी ख़्वाजा-ए-हदीस से यह हदीसे मुबारक सुनी फ़रमाया:-

مَنْ قَبَّلَ عِنْدَ سَمَاعِهِ مِنَ الْمُتَوَدِّعِ
كَلِمَةَ الشَّهَادَةِ ظَفَرِيْ إِبْهَامَيْهِ
وَمَسَحَهُمَا عَلَى عَيْنَيْهِ وَقَالَ عِنْدَ
الْمَسِّ اَللّٰهُمَّ احْفَظْ حَقَّتِيْ وَنُورِ

जो शख्स मुअज़्ज़िन से
कलम-ए-शहादत सुन कर
अंगूठों के नाखुन चूमे और आँखों
पर फेरे और यह पढ़े

هَمَابِير كَةِ حَدَقْتِي مُحَمَّدِرَسُولِ
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَنُورِهِمَا لَمْ يَغْمِ الْقَامِدُ أَحَدَهُ

(10) शरह नकायह में है :-

وَعَلِمَ أَنَّهُ يَسْتَحَبُّ أَنْ يُقَالَ عِنْدَ
سَمَاعِ الْأُولَى مِنَ الشَّهَادَةِ صَلَّى
اللَّهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَ عِنْدَ
الثَّانِيَةِ مِنْهَا قُرْءَةً عَنِّي بِكَ يَا رَسُولَ
اللَّهِ ثُمَّ يُقَالَ اللَّهُمَّ مَتَّعْنِي بِالسَّمْعِ
وَالْبَصَرِ بَعْدَ وَضْعِ ظَفَرِي الْإِبْهَامَيْنِ
عَلَى الْعَيْنَيْنِ فَإِنَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ يَكُونُ لَهُ قَائِدًا إِلَى الْجَنَّةِ

वह कभी अन्धा न होगा।

जान लो कि बेशक अज्ञान
की पहली शहादत के सुनने पर
सल्लल्लाहु अलैका या रसूलल्लाह
और दूसरी शहादत के सुनने पर
कर-तु अैनी बि-क या
रसूलल्लाह कहना मुस्तहब है।
फिर अपने अंगूठों के नाखुन
(चूम कर) अपनी आँखों पर रखे
और कहे

तो हुजूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ऐसा करने
वाले को अपने पीछे-पीछे जन्नत
में ले जायेंगे।

(11) अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि रहूल मुहतार शरह दुर्रे
मुख्तार में यही इबारत लिख कर फरमाते

كَذَا فِي كِتَابِ الْعِبَادَةِ فِي هَذَا فِي التَّوَارِيقِ الصُّوفِيَّةِ وَفِي كِتَابِ الْفُرُوسِ مِنْ قِبَلِ ظَفَرِي الْإِبْهَامَيْنِ عِنْدَ سَمَاعِ الشَّهَادَةِ
أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ فِي الْأَذَانِ الْأَوَّلَةِ وَمَذْجَلَهُ فِي صَفْوَةِ الْجَنَّةِ وَتَمَانَهُ إِلَى حَوَائِجِ الْحَجَرِ لِلرَّمْلِيِّ

ऐसा ही कंजुल एबाद इमाम कहस्तानी में और इसी की मिस्ल
फतवा सूफिया में है और किताबुल फिरदौस में है कि जो शख्स अज्ञान

मनु कर भयन अगूठों के नाखुनों को चूमे
हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान
की वजह से क़य़द बरगा और उसका जन्नत की सफ़ों में दाख़िल
हुआ अरस बहरर गइक़ क हवाशीए रमली में है।

१. मक़बरा फक़हारी हनफ़िया अल्लामा तहतावी रहमतुल्लाह
अलैहि यहाँ मक़बरा फक़हारी में यहाँ इब्राहिम और वैलमी की हज़रत
२. मक़बरा फक़हारी अल्लामा अहमद वासी मरफ़ूअ हदीम नक़ल करके
फ़रमाते हैं-

और इसी तरह हज़रत

و كذا روى عن الحسن بن حماد
ومثله يعين في البصائر

गिद्वन्न अल्लहिम्सलाम स भी
गिद्वान्न किया गया है और
फ़जाइल आमाल में इन अहदीस
पर अमल किया जाता है।

से नकल फुरमाते है।

ज्ञान लो बिलाशुबहा अज्ञान

اعلم انه يستحب عند صبح اربعين
استغفار ثلثة صغائر لله عز وجل
الله وعبد صبح الله في حق الله
يا رسول الله ثم ثلثين مرة
والسمع والسمع والسمع
الان في حق الله

की पहली शहादत के सुनने पर
 मुस्तल्लाह अलैक या रमूलल्लाह
 और दूसरी शहादत के सुनने पर
 कर रू ऐनी बि रु या
 रमूलल्लाह कहना मुस्तल्लाह है
 फिर अपने अंगूठों के नाखून
 चूम कर, अपनी आँखों पर रखे
 और कह

ता हजुर सल्लल्लल्लहि

अतीति व मूलनम ऐसा करने
काल का अपने पीछे पीछे जन्म

عَنْبِدُ وَمِنْهُ يَكُونُ الْوَعْدُ لِي بِحَبِ

صَرَّحَ بِهِ مَشَائِخُنَا

में ले जायेगा।

(14) शाफ़िआ मज़हब की मशहूर किताब "अआनतुल तालिबीन अला ल हल्लिल अलफ़ाज़ फतदुल माओन के सफ़हा 247" और मालकी मज़हब की मशहूर किताब "किफ़ायतुल तालिबुर्ब्बानी लिस्मात्नाति इब्ने अवी ज़ेद अल कौरवानी के सफ़हा 169 पर है कि जब अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामें पाक सुने तो दुरुद शरीफ़ पढ़े।

ثُمَّ يَقْلُ إِبْهَامِيهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلَى عَيْنَيْهِ لَمْ يَغْمِ وَلَمْ يَرْمُدْ أَدَا

फिर अगूठा चूमे और उनको आँखों पर रखे तो न कभी भ्रन्धा हागा और न कभी आँखें दुखेंगी।

(15) शैखुल मशाइख़ रईसुल मुहकिक्कीन, सय्यदुल उलमा ए हनफ़िया विमक्ककत्तिल मुक़र्रिमा मौलाना जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की रहमतल्लाहु अलैहि अपने फ़तवा में फ़रमाते हैं कि-

سَنَنْتُ عَنْ تَقْبِيلِ الْإِبْهَامَيْنِ وَ وَصْعِهِمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اسْمِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَدَانِ هُوَ حَرَامٌ لَا أَجِبْتُ بِمَا بَصَّه نَعَمْ تَقْبِيلُ الْإِبْهَامَيْنِ وَ وَصْعُهُمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اسْمِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَدَانِ جَائِزٌ هُوَ مُسْتَحْتٌ صَرَّحَ بِهِ مَشَائِخُنَا -

मुझसे सवाल हुआ कि अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्मे मुबारक के जिक्र के वक़्त अंगूठे चूमना और आँखों पर रखना जाइज़ है या नहीं? मैं इन लफ़्ज़ों से जवाब दिया कि हाँ अज़ान में हुज़ूर अक़दम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामें मुबारक सुन कर अगूठे चूमना और आँखों पर रखना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है हमारे मशाइख़े मज़हब ने इसके मुम्नहब होने की तसरीह फ़रमाई है।

(16) शखुल आनिम अल मुफस्सिल अल्लामा नूरुद्दीन खुरासानी
रज़ियल्लाहु अलैहि फरमान है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
को इस प्रकार अज़ान में सुन कर अंगूठे चूमा करता था। फिर छोड़
कर आगे बढ़ने लगे और बीमार हो गयी।

فرايتُ صلّى الله عليه وسلّم صاف
فقال لم تركت مسح عيبيك عند
الاذان ان ارادت ان ترا عيبيك فقد
الي المسح فاستيقظت ومسحت
فكنت وكلم يعاودني مرصفتي
اليد

तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में
देखा, फरमाया तूने अज़ान के
वक़्त अंगूठे चूम कर आँखों से
लगाना क्यों छोड़ दिया? अगर
तू चाहता है कि तेरी आँखें
दुरुस्त हो जायें तो वह अमल
फिर शुरू कर दे। पस मैं बेदार
हुआ और यह अमल शुरू कर
दिया तो मेरी आँखें दुरुस्त हो
गयीं। और उसके बाद अब तक
वह मर्ज़ नहीं लौटा।

(17) हज़रत बहब बिन ममयह रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते है कि
ममकईल में एक शख्स था जिसने दो सौ बरस अल्लाह तआला
को नाफरमाती में गुज़ार थे। जब वह मर गया तो लोगों ने उसको
ममकईल (जहाँ नज़ासत बगैरह डाली जाती है) में फेंक दिया तो
अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को वहीय की कि इसको वहाँ
से हटाओ और उस पर नमाज़ पढ़ो। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया
कि हे परवगदगार! क्या इसगईल इसके नाफरमान होने की शहादत
करेगा? अल्लाह हुआ या नहीं है

لَا إِلَهَ إِلَّا كَلَّمَا بَشَرًا فَوْقَ سَطَرٍ

मगर उसकी आदत थी कि
जब वह तौरात को खोलता और
(हज़रत) मुहम्मद सल्लल्लाहु

اِلٰی اِسْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
 وَسَلَّم قَبْلَهُ وَوَضَعَهُ عَلَى عَيْنَيْهِ
 وَصَلَّى عَلَيْهِ فَشَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ
 وَغَفَرْتُ ذُنُوبَهُ وَزَوَّجْتُهُ سَبْعِينَ
 حُورًا

अल्लैहि वसल्लम के नामे पाक को
 देखता तो उस नाम को चूम कर
 आँखों से लगा लेता और दुरूद
 भेजता। पस मैंने उसका यह
 हक माना और उसके गुनाह को
 बख्श दिया और सत्तर हूरें उसके
 निकाह में दी।

(18) सय्यदुल आरफ़ीन हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अल्लैह मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं।

बूद दर इंजीले नामे मुस्तफ़ा आं सरें पैग़म्बरां बहरे सफ़ा
 इंजील में हज़रत मुम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम का
 नामे मुबारक दर्ज था वह मुस्तफ़ा जो पैग़म्बरों के सरदार और बहरे
 सफ़ा हैं।

बूद ज़िक्रे हुलिया हा व शकले ऊ बूद ज़िक्रे गुज़ो सोम व अकले ऊ
 नोज़ आपके औसाफ़े जिस्मानिया, शकलो शमाइल, जिहाद
 करने, रोज़ा रखने और खाने-पीने का हाल भी दर्ज था।

ताइफ़ा नसरानियां बहरे सवाब चूं रसीदन्दे बदां नामो ख़िताब
 बोसा दादन्दे बदां नामे शरीफ़ रूनेहा दन्दे बदां वस्फ़े लतीफ़

ईसाइयों की एक जमाअत जब इस नामे पाक और ख़िताबे
 मुबारक पर पहुंची तो वह लोग बग़रजे सवाब इस नामे शरीफ़ को
 बोसा देते और इस ज़िक्रे मुबारक पर बतौरें ताज़ीम मुंह रख देते।
 नस्ले ईशां नोज़ हम बिस्वार शुदनूरे अहमद नासिर आमद यार शुद

(इस ताज़ीम की बदौलत) उनकी नस्ल बहुत बढ़ गयी और
 हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम का नूरे मुबारक (हर
 मुआमले में) उनका मददगार और साथी बन गया।

बां गरोहे दीगर अज़ नसरानियां नामे अहमद दाशतन्दे मुस्तहां
 और उन नसरानियों का वह दूसरा ग़िरोह अहमद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के नामे मुबारक की बेकदरी किया करता था।

मुस्तहाने ख़्वार ग़श्तन्द आं फ़रीक़

ग़श्ता महरूम अज़ खुद व शर्ते तरीक़

वह लोग ज़लीलो ख़्वार होगए अपनी हस्ती से भी महरूम होगए (कि क़त्ल किए गए) और मज़हब से भी महरूम होगए यानी अक़ाइद ख़राब होगए।

नामे अहमद चूं चुनी यारी कुनद ताकि नूरश चूं मददगारी कुनद

जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक ऐसी मदद करता है तो ख़याल करो कि आपका नूरे पाक किस क़दर मदद कर सकता है।

नामे अहमद चूं हिसारे शुद हिस्सीन

ताचे: बाशद ज़ाते आं रूहुल-अमी

जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक ही हिफ़ाज़त के लिए मज़बूत क़िला है तो उस रूहुल अमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक कैसी होगी।

(मसनवी शरीफ़ दफ़्तरे अव्वल)

शुबहा! बाज़ लोग यह कहते हैं कि यह तमाम अहादीस ज़ईफ़ है इनमें एक भी सही मरफूअ हदीस नहीं है चुनान्वे: मुहद्देसीन ने इन अहादीस को लिख कर फ़रमाया

लिहाज़ा अहादीसे

ज़ईफ़ा से किस तरह एक शरअी मसअला साबित हो सकता है?

इसके मुतअल्लिक़ सिर्फ़ इतना अर्ज़ कर देना काफी है कि मुहद्देसीन किराम का किसी हदीस के मुतअल्लिक़ फ़रमाना कि सही नहीं इसके यह मअना नहीं होते कि ग़लत व बातिल है बल्कि इसका मतलब यह होता है कि यह सेहत कि उस आला दर्जे को न पहुंची जिसे मुहद्देसीन अपनी इस्तेलाह में दर्जा-ए-सेहत कहते हैं। याद रखिए! इस्तेलाहे मुहद्देसीन में दीस का सबसे आला दर्जा सही और सबसे बदतर मौज़ूअ है और वस्त में बहुत से अक़साम हैं जो दर्जा

ब दर्जा मुरत्तब है। सही के बाद हसन का दर्जा है लिहाजा नफीए सेहत नफीए हसन को मुस्तलजिम नहीं। बल्कि अगर जईफ़ भी हो तो फ़जाइले आमाल में हदीस जईफ़ बिलइजमाअ मकबूल है और इन अहादीस के मुतअल्लिक मुहदेसीन का ला यसह फ़ीलमरफूअ यानी यह तमाम अहादीस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक मरफूअ होकर सही साबित नहीं हुई फ़रमाना साबित करता है कि यह अहादीस मौकूफ़ सही है।

(19) चुनान्वे अल्लामा इमाम मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है।

मैं कहता हूँ कि जब इस

हदीस का रफ़अ हज़रत सिद्दीके

अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तक

साबित है तो अमल के लिए

काफ़ी है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का फ़रमान है

कि मैं तुम पर लाजिम करता हूँ

अपनी सुन्नत और अपने

खुल्फ़ा-ए-राशेदीन की सुन्नत।

मालूम हुआ कि हदीसे मौकूफ़ सही है क्योंकि सय्यदिना सिद्दीके

अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तक इसका रफ़अ साबित है। और सय्यदिना

सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की सुन्नत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की सुन्नत है। चुनान्वे मुख़ालेफ़ीन के सरदार मौलवी ख़लील

अहमद अम्बेठवी व मौलवी रशीद अहमत गंगोही कहते हैं। "जिसके

जवाज़ की दलील कुरूने सलासा में हो ख़्वाह वह जज़बीयए बे वजूद

ख़ारजी उन कुरून में हुआ या न हुआ और ख़्वाह उसकी जिन्स का

वजूद ख़ारिज में हुआ हो या न हुआ हो वह सब सुन्नत है (बराहीने

क़ातिआ सफ़हा 28) साबित हुआ कि गंगोही साहिब के नज़दीक

अज़ान में नामे अक़दस सुनकर अंगूठे चूमना सुन्नत है क्योंकि मुल्ला

अली क़ारी की इबारत से कुरूने सलासा में इसकी असल मुतहक्किक हो गयी फिर इसको बिदअत वगैरह कहना जिहालत और तअस्सुब नही तो और क्या है।”

अपने सुन्नी भाईयों की खिदमत में

मेरे सुन्नी भाईयो! होश में आओ। ख़बरदार होजाओ। यह दौर बड़ा नाजुक और फ़ितनों का दौर है। सख़्त आजमाइश का वक़्त है। बे दीनी व बद अक़ीदगी की आंधियां और गुमराही के तूफ़ान जोरों पर हैं। लिहाज़ा अपने ईमानों अक़ाइद की ख़ूब हिफ़ाज़त करो और बुज़ुरग़ाने दीन के तरीक़े पर क़ाइम रहो। ग़ैरों की सोहबत व मजलिस और तक्रारीर व लेट्रेचर से इजतेनाब करो और उल्मा-ए-रब्बानीईन, बुज़ुरग़ाने दीन, सल्फ़े सालेहीन के हालात का मुताअला करो और उनकी किताबें पढ़ो और सौम व सलात की पाबन्दी करो। दुरूद व सलाम की कसरत रखो। क्योंकि ईमान की सलामती इससे बाबस्ता है। शरीअत के मुताबिक़ दाढ़ियां रखो। सादा व सुथरा लिबास पहनो। सरो पर अंग्रेजी बाल न रखो। कानों तक पट्टे रखो। किसी अल्लाह वाले की सोहबत अख़्तियार करो जो सही मानों में अल्लाह वाला हो। आपस में इत्तेफ़ाक़ व मुहब्बत से रहो। अल्लाह करीम तबारक व तआला बतुफ़ैल अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लिम हमें अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइद व आमाल पर क़ाइम रखे और खात्मा ईमान पर फ़रमाए। *आमीन सुम्म आमीन० बहुर्मते सय्यदिल मुर्सलीन रहमतुल लिल आलिमीन शफ़ीउल मुज़न्निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम०*

तालिबे दुआ
मुहम्मद शफ़ी अलख़तीब
ओकाड़वी कराची